रखरखाव

अंतरफसल के रूप में उगाए गए पौधों को पर्याप्त छाया मिलती है परंतु पूरी तरह से खुले में उगाए जाने पर सभी दिशाओं से छाया का प्रबंध किया जाना चाहिए। इसके लिए, पौधों के चारों ओर लकड़ी के खंभों का उपयोग करके लगभग 1.2 मीटर ऊँचाई का 50% छायादार जाल (शेड नेट) बांधा जा सकता है। शुरुआती दो सालों तक ऐसा करने से पौधे खेत में जल्दी स्थापित हो जाते हैं और उनकी वृद्धि समुचित तरीके से होती है। द्वीपों में सूखे मौसम (जनवरी से मई तक) के दौरान फसल को सूखने से बचाने के लिए सिंचाई की आवश्यकता होती है। टपक (ड्रिप) सिंचाई एक व्यवहार्य विकल्प है जो न केवल पानी की बचत करता है बल्कि पौधों की वृद्धि और विकास में भी मदद करता है।

कीट और रोग

नई पत्तियों के उभरने के दौरान, पत्तियाँ खाने वाले कीड़ों की उपस्थिति आमतौर पर देखी जाती है लेकिन नुकसान मौसमी होता है और केवल कुछ पत्तियाँ ही क्षतिग्रस्त होती हैं। इसलिए, जब तक कीट गंभीर नुकसान नहीं पहुंचाता, तब तक नियंत्रण की आवश्यकता नहीं है। इसके अलावा, छोटे पौधों में, यहां तक कि नर्सरी में, स्केल कीटों का हमला देखा गया है, और उनके नियंत्रण के लिए 0.5% नीम तेल (5 मिली/लीटर पानी) का छिड़काव करने की सिफारिश की जाती है। गंभीर रूप से संक्रमित शाखाओं की छंटाई और विनाश किया जाना चाहिए ताकि अत्यधिक संक्रमित पौधों में कीटों का बोझ कम किया जा सके, अन्यथा शाखाएँ और कभी–कभी पूरे पौधे भी सूख सकते हैं।

फसल कटाई और उपज

तेजपत्ते का पौधा अंडमान की परिस्थितियों में तेजी से बढ़ता है और इस प्रकार, फसल साल में कई बार काटी जा सकती है, बशर्ते शाखाओं के ऊपरी भाग की पत्तियाँ पूरी तरह से परिपक्व हों और मौसम सूखा हो। शाखाओं को एक तेज दरांती या धारदार बड़े चाकू से काटकर उन्हें प्रसंस्करण क्षेत्र में लाया जाना चाहिए, जहां सभी क्षतिग्रस्त पत्ते हटा दिए जाते हैं। छोटी शाखाओं को अलग किया जाता है और अच्छी तरह हवादार कमरों में हवा में सुखाया जाता है। इसके लिए, खिड़कियों और पंखे वाले कमरे में रस्सियों पर शाखाएँ लटकाई जा सकती हैं। ऐसा करना आवश्यक है क्योंकि द्वीपों में उच्च आर्द्रता और लंबे समय तक बारिश रहती है। वैकल्पिक रूप से, पत्तियों को शाखाओं से अलग किया जा सकता है और इन कमरों में साफ तिरपाल/चटाई पर फैलाया जा सकता है। सूर्य की सीधी रोशनी में पत्तियों का सूखना उत्पाद के रंग और सुगंध पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है और इसलिए, ऐसा नहीं किया जाना चाहिए। ताजे पत्ते सूखने के बाद लगभग 50–55% तक कम हो जाते हैं, जिसका मतलब है कि एक किलोग्राम ताजे पत्तों से लगभग 500 से 550 ग्राम सूखे पत्ते प्राप्त किए जा सकते हैं। 1 मीटर लंबाई की प्रत्येक शाखा से लगभग आधा किलोग्राम सूखे पत्तों की उपज प्राप्त की जा सकती है। पत्तियों को ठीक से न सुखाने से उत्पाद पर फफूंदी का संक्रमण हो सकता है, जिसे काले धब्बों के रूप में देखा जा सकता है। यह द्वीपों में देखी जाने वाली एक सामान्य समस्या है और जब उत्पाद को सही तरीके से संग्रहीत नहीं किया जाता है तो यह और बिगड़ जाती है। उत्पाद का भंडारण एयर टाइट फूड ग्रेड पैकेजिंग सामग्री (90 से 100 माइक्रोन) में किया जाना चाहिए ताकि उत्पाद के रंग और सुगंध को लंबे समय तक बनाए रखा जा सके।

उद्धरण

अजित अरुण वामन और पूजा बोहरा (2025), अंडमान द्वीप समूह में तेजपत्ते की वैज्ञानिक खेती की तकनीकें। तकनीकी प्रपत्र, भाकृअनुप– केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, श्री विजयपुरम (पोर्ट ब्लेयर)–744105, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, भारत, पृष्ठ 1–4।

तकनीकी प्रपत्र/06/2025

अंडमान द्वीप समूह में तेजपत्ते की वैज्ञानिक खेती की तकनीकें

अजित अरुण वामन और पूजा बोहरा

भाकृअनुप–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान,
श्री विजयपुरम (पोर्ट ब्लेयर)–744105,
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, भारत

2025

तेजपत्ता (सिन्नामोमम तमाला, लॉरेसी)

प्रस्तावना

तेजपत, तेजपत्ता या बिरयानी पत्ती एक कम उगाया जाने वाला परंतु महत्वपूर्ण मसाला है, जो अंडमान द्वीपों में उगाया जाता है। आम तौर पर इसे बे लीफ कहा जाता है, हालांकि यह नाम एक पूरी तरह से अलग प्रजाति (लॉरस नोबिलिस) का है। इंडियन बे लीफ इसके लिए सही शब्द है। तेजपत्ता अन्य मसालों की तुलना में एक कम घनत्व वाला मसाला है और इसलिए, यह सुदूरवर्ती बाजारों के लिए तुलनात्मक रूप से कम लाभदायक है। हालांकि, द्वीपों का होटल उद्योग स्थानीय उत्पादों के लिए विपणन के अच्छे अवसर प्रदान कर सकता है। बगीचे में लगाए हुए तेजपत्ते के कुछ पौधे द्वीप के किसानों की घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने के अलावा उनके लिए नियमित आय का स्रोत बन सकते हैं।

भूमि का चयन

तेजपत्ता एक सहिष्णु प्रजाति है, जो हिमालय की तलहटी से लेकर देश के तटीय गर्म और आर्द्र क्षेत्रों, जिसमें अंडमान द्वीप भी शामिल हैं, में उगाई जाती है। इसके व्यापक अनुकूलन को देखते हुए, इसे द्वीपों में खुले और अंतः फसल प्रणाली दोनों के तहत सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।

प्रजातियों का चयन

वर्तमान में देश में खेती के लिए तेजपत की कोई उन्नत किस्में उपलब्ध नहीं हैं। हालांकि, आईसीएआर–सीआईएआरआई ने उच्च गुणवत्ता वाले जीन संसाधन की पहचान की है जिसे अंडमान द्वीपों में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।

पौध प्रवर्धन की विधि

द्वीपों की जलवायु में इस फसल में फलन नहीं होता है, इसलिए बीज से पौध बनाना संभव नहीं है। यहाँ तेजपत्ते के पौध प्रवर्धन का एकमात्र साधन वानस्पतिक प्रवर्धन है। इसके लिए, आईसीएआर–सीआईएआरआई, श्री विजयपुरम में मानकीकृत एयर लेयरिंग (गूटी कलम) तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। गूटी कलम की प्रक्रिया मानसून के दौरान पहले से चयनित उत्कृष्ट मातृ पौधों में की जानी चाहिए। लगभग 25 सेमी लंबाई के तने में निचले भाग से पत्तियों को हटाकर लगभग एक इंच चौड़ी छाल को गोलाई में निकाला जाता है। इसके लिए स्टेनलेस स्टील के चाकू का उपयोग किया जाना चाहिए। घाव वाले क्षेत्र में जड़ निकले बिना घट्टा (कैलस) बनने से घाव भर जाता है और नया पौधा नहीं बन पाता। इससे बचने के लिए घाव वाले क्षेत्र को चाकू का उपयोग करके धीरे–धीरे खुरच देना चाहिए। घाव के ऊपरी भाग में 2,000 पीपीएम (मिग्रा/किलोग्राम) की क्षमता वाले जड़ बनाने वाले हार्मोन (इंडोल 3–ब्यूटायरिक एसिड) के पाउडर किग्रा को चुटकीभर मात्रा में लगाने से जड़ों का विकास अच्छे से होता है। अब घाव वाले हिस्से को नम नारियल भूसी की कंपोस्ट से ढककर ऊपर से धागे की सहायता से पारदर्शी पॉलीथिन से मजबूती से बांध देना चाहिए। जड़ों के पूर्ण विकास के लिए लगभग 45 से 50 दिन की आवश्यकता होती है तथा यह प्रक्रिया बंधी हुई पारदर्शी पॉलीथीन के माध्यम से दिखाई देती है। अब जड़दार पौधों को मातृ पौधों से अलग कर लिया जाता है और नारियल भूसी की कंपोस्ट निकालकर इन्हें मिट्टी और गोबर की खाद के समान अनुपात से भरे पॉलीबैग में लगाया जाता है। दृढ़ीकरण के लिए, लेयरिंग से तैयार पौधों को माइक्रो–स्प्रिंकलर सुविधा वाले, प्राकृतिक रूप से हवादार पॉलीहाउस या छायादार नेट हाउस में रखना चाहिए। ऐसा करते समय पत्तियों का तीन चौथाई हिस्सा काट देना चाहिए, जिससे वाष्पोत्सर्जन की दर कम हो सके। तैयार पौधों का उपयोग अगले मानसून में पौधारोपण के लिए किया जा सकता है।

मातृ पौधों से अलग किए गए गूटी कलम से तैयार पौध (बाएं) जिनमें सुविकसित जड़ें दिखाई दे रही हैं (दाएं)

दृढ़ीकरण के लिए रखे गए गूटी कलम से तैयार पौध (बाएं) और खेतों में लगाने के लिए तैयार तेजपत्ते के दृढ़ीकृत पौधे (दाएं)

रोपण विधि और दूरी

पत्ते इस फसल का आर्थिक हिस्सा हैं और फसल की कटाई से पेड़ की छंटाई भी होती है। इसलिए, वाणिज्यिक खेती के लिए दोनों तरफ से पेड़ों के बीच 2 से 3 मीटर की दूरी रखी जा सकती है। सुपारी के बागानों में, चार सुपारी के पेड़ों के केंद्र में 2.7 से 3.0 मीटर की दूरी पर तेजपत्ते का रोपण किया जा सकता है। खेत में चिन्हित स्थानों पर लगभग 45 सेमी × 45 सेमी × 45 सेमी आकार के गड्ढे खोदकर उन्हें अच्छे से सड़ी हुई गोबर की खाद (6 से 8 किलोग्राम) से भरा जाना चाहिए। पौधे लगाते समय भरे हुए गड्ढे से पॉलीथीन के आकार की मिट्टी निकालकर उसमें गूटी कलम से तैयार पौधे को लगाया जाना चाहिए। मिट्टी और जड़ों के बीच अच्छा संपर्क आवश्यक है, जिसे पौधे के चारों ओर की मिट्टी को मजबूती से दबाकर सुनिश्चित किया जा सकता है।

सुपारी के बीच में तेजपत्ते के अच्छी तरह से बढ़ते पौधे